महुआ वृक्ष

चर्चा में क्यों?

मध्य भारत के जनजातीय समुदायों के जीवन से गहराई से जुड़ा महुआ वृक्ष (*Madhuca longifolia*) अपने **सामाजिक-आर्थिक** तथा **पारिस्थितिकी महत्त्व** के कारण **पारंपरिक ज्ञान** के दस्तावेज़ीकरण और **देशी वनस्पतियों के संरक्षण** के प्रयासों के बीच ध्यान आकर्षित कर रहा है।

- यह सामान्यतः **पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार**, **उत्तर और मध्य भारत** के कुछ हिस्सों **तथा महाराष्ट्र, गुजरात, तेलंगाना, तमिलनाडु और केरल** में पाया जाता है।

मुख्य बिंदु

- **महुआ के बारे में:**
- **वानस्पतिक पहचान:**
  - महुआ एक **मध्यम आकार** की पर्णपाती प्रजाति है, जो लगभग **16 से 20 मीटर** ऊँचाई तक पहुँचती है।
  - यह मुख्यतः **मध्य भारत** के **वन क्षेत्रों** में होता है।
  - यह वृक्ष **मार्च-अप्रैल** के बीच खिलता है और इसमें **क्रीमी-सफेद फूल** आते हैं, जो **सूर्योदय से पहले** गिर जाते हैं।
  - इसके फल **जून से अगस्त** तक पकते हैं तथा **मौसमी कटाई** के लिये उपयुक्त होते हैं।
- **सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व:**
  - आदिवासी समुदाय द्वारा महुआ को **"जीवन का वृक्ष"** के रूप में पूजनीय माना जाता है।
  - वे इसके प्रत्येक भाग- फूल, पत्तियाँ, फल, बीज तथा फल के छिलकों का उपयोग दैनिक रीति-रिवाजों और अंतिम संस्कार जैसे प्रमुख अनुष्ठानों में करते हैं।
- **पोषण संबंधी और आर्थिक महत्त्व:**
  - आदिवासी लोग महुआ के फूलों को कच्चा या सुखाकर खाते हैं, क्योंकि वे **पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर होते हैं।.**
  - इन फूलों को परंपरागत रूप से किण्वित कर एक स्थानीय मादक पेय तैयार किया जाता है, जो आजीविका का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।
- **वन पारिस्थितिकी तंत्र में भूमिका:**
  - महुआ के रात में खिलने वाले, सुगंधित फूल चमगादड़ों को आकर्षित करते हैं, जिससे **परागण** और **बीज प्रसार** को बढ़ावा मिलता है।
  - **स्लॉथ बियर** तथा अन्य वन्यजीव इसके फूलों का उपभोग करते हैं, जिससे **वन खाद्य शृंखला** में इसकी भूमिका स्पष्ट होती है।
- **आदिवासी आजीविका और नवाचार में योगदान:**
  - महुआ फूलों का **संग्रह, सुखाना तथा प्रसंस्करण** एक प्रमुख **मौसमी व्यवसाय** है, विशेषकर **आदिवासी महिलाओं** के लिये।
    - यह गतिविधि खाद्य सुरक्षा, **आय सृजन** तथा **स्थानीय रोज़गार** सुनिश्चित करती है।
  - भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (TRIFED) ने **फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसफर (FIIT)** के सहयोग से **महुआ उत्पादों** के **वाणिज्यिक मूल्य** को बढ़ाने हेतु **महुआ न्यूट्रा पेय** विकसित किया है
    - इस पहल का उद्देश्य नवाचार के माध्यम से **जनजातीय समुदायों की आय** को बढ़ावा देना है।
  - यह **महुआ से संबंधित भारत का पहला वैज्ञानिक नवाचार** है, जिसकी शुरुआत **झारखंड** से हुई है तथा यह **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण** और **नवाचार** के माध्यम से **लघु वन उपज (MFP)** के **मूल्य संवर्द्धन** पर **TRIFED** की नीति को दर्शाता है।

भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (ट्राइफेड)

- **भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास परिसंघ (TRIFED) की स्थापना** वर्ष 1987 में हुई। यह राष्ट्रीय स्तर का एक शीर्ष संगठन है, जो **जनजातीय कार्य मंत्रालय** के प्रशासकीय नियंत्रण के अधीन कार्य करता है।
- ट्राइफेड का प्रमुख उद्देश्य जनजातीय उत्पादों, जैसे- **धातु कला, जनजातीय टेक्सटाइल, कुम्हारी,** जनजातीय पेंटिंग, जिन पर जनजातीय लोग अपनी आय के एक बड़े भाग हेतु बहुत अधिक निर्भर हैं, के विपणन विकास द्वारा देश में जनजातीय लोगों का सामाजिक-आर्थिक विकास करना है।
- ट्राइफेड जनजातियों को अपने उत्पाद बेचने में एक समन्वयक और **सेवाप्रदाता** के रूप में कार्य करता है।
- यह जनजातीय लोगों को जानकारी, **उपकरण और सूचनाओं के माध्यम से** सशक्त करता है, ताकि वे अपने कार्यों को अधिक क्रमबद्ध और वैज्ञानिक तरीके से कर सकें।
- इसमें जागरूकता, स्वयं सहायता समूहों की रचना और कोई खास कार्यकलाप करने के लिये प्रशिक्षण देकर जनजातीय लोगों का क्षमता निर्माण भी

शामलि है।

- ट्राइफेड का **मुख्य कार्यालय नई दलि्ली में स्थति है** और देश में वभिन्नि स्थानों पर इसके **15 क्षेत्रीय कार्यालय हैं।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/mahua-tree